चतुर्वर्गप्रदायक पार्थिव शिवपूजा विमर्श

नारद ने ईश्वर से कहा कि हे प्रभो! धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष के परम हितसाधन को कृपा करके बतलाइये, जो सभी पापों का विनाशक, सभी अरिष्टों का निवारक, सर्ववश्यकर और कलियुग में सर्वत्र सिद्धिदायक है-

नारद उवाच

धर्मार्थकाममोक्षाणां साधनं परमं हितम् ।

तत्सर्वं कथयस्व त्वमनुग्राह्योऽस्मि ते विभो ॥१॥

सर्वपापक्षयकरं सर्वारिष्टनिवारणम् ।

सर्ववश्यकरं चैव कलौ सर्वत्र सिद्धिदम् ॥२॥

ईश्वर ने कहा- हे नारद! सुनो, अब उस शिवपूजन विधान को कहता हूँ, जिसके अनुष्ठानमात्र से मनुष्य कृतकृत्य हो जाता है। पार्थिव लिङ्ग का पूजन किये बिना जो अन्य देवताओं का पूजन करता है, उसकी वह पूजा व्यर्थ होती है। उसके स्नान, दान भी व्यर्थ होते हैं। पार्थिव-पूजन के

लिये शुद्ध मिट्टी लाकर उसे विशेष प्रकार से शोधित करे। उससे यथोक्त विधि से लिङ्गाकृति बनावे। इस उत्तम पार्थिव लिङ्ग का पूजन विधि-विधान से करे। तत्त् नामों से अखण्ड रूप से उसकी पूजा करे। मन्त्र से मिट्टी लावे। उस मिट्टी से आकृति बनावे, उसे प्रतिष्ठित करे, उसमें देवता का आवाहन करके उसे स्नान कराकर उसका पूजन कर उससे क्षमा माँग कर विसर्जन करे।

हर, महादेव, महेश्वर, शूलपाणि, पिनाकधृक, पशुपति, शिव, महादेव- इन नामों से क्रम से पूजन एवं विसर्जन करे। पार्थिव लिङ्ग को दो खण्ड में बनाकर पूजा करने से वह पूजा निष्फल होती है। पके जामुन के फल के बराबर लिङ्ग सर्वाथसिद्धिदायक होता है। चिपटा लिङ्ग हानि एवं पीड़ाकारक होता है। स्वबौज के साथ मूल मन्त्र से पूजा करे। बिन्दु सहित चौदहवाँ स्वर औ एवं ह अर्थात् 'हौं' शिव की कृपा प्रदान करने वाला शिव का प्रणव है। शर्व, भव, रुद्र, उग्र, भीम, ईशान, महादेव, पशुपति नामक आठ मूतियों की पूजा करें। ये आठों भूमि, जल, अग्नि, वायु, आकाश, सोम, सूर्य, यजमान मूर्तिस्वरूप होते हैं-

ईश्वर उवाच

शृणु नारद वक्ष्यामि शिवपूजाविधानकम् ।

यस्यानुष्ठानमात्रेण कृतकृत्यो भवेन्नर: ॥३॥

अकृत्वा पार्थिवं लिङ्गं योन्यदेवं प्रपूजयेत् ।

वृथा भवति सा पूजा स्नानदानादिकं वृथा ॥४।॥

शुद्धां मृदं समानीय पुनः शोध्य विशेषतः ।

लिङ्गाकारं ततः कुर्याद्विथोक्तविधिना पुमान् ॥५॥

पूजयेत् सविधानेन पार्थिवं लिङ्गमुत्तमम् ।

अखण्डं कारयेद्यत्नावक्ष्यमाणैश्च नामभि: ।॥६ ॥

मृदाहरणसंघट्टप्रतिष्ठाह्वानमेव च।

स्नपनं पूजनं चैव क्षमस्वेति विसर्जनम् ॥७॥

हरो महेश्वरश्चैव शूलपाणि: पिनाकधृक्।

पशुपतिः शिवश्चैव महादेव इति क्रमात् ॥८ ॥

द्विखण्ड यः करोत्येवं तस्य पूजापि निष्फला ।

पक्वजम्बूफलाकारं सर्वकामप्रदं शिवम् ।॥९।॥

आदि शंकर वैदिक विद्या संस्थान

दूरभाष: 9044016661

विवरं यः करोत्येवं हानिपीडाकरं भवेत् ।

कुर्यात्साक्षात्त्वबीजेन मूलमन्त्रेण पूजनम् ॥१०॥

चतुर्दशस्वरोपेतो हकारो बिन्दुसंयुतः ।

शिवप्रसादजनकः शिवप्रणवसंज्ञकः ॥११।॥

शर्वो भवश्च रुद्रोग्रौ भीम ईशानसंज्ञकः ।

महादेवः पशुपतिमूर्तिभिश्चैव पूजयेत् ॥१ २।॥

क्षितिरापोऽनलो वायुराकाशः सोमसूर्यकौ ।

यजमान इति ह्यष्टौ मूर्तयः परिकीर्तिताः ॥१३॥

नारद ने कहा कि हे देव! सर्वकामद कौन सा विधान है, जिसके अनुष्ठान से मनुष्य कृतकृत्य होता है-

नारद उवाच

देव केन विधानेन कर्तव्यं सर्वकामदम् ।

यस्यानुष्ठानमात्रेणकृतकृत्यो भवेन्नरः ॥१४॥।

ईश्वर ने कहा – हे मुने! मनुष्यों को कामना के उद्देश्य से नित्य उत्तम पार्थिव लिङ्ग बनाना चाहिये। पार्थिव लिङ्ग अखण्ड बनता है एवं स्थावर लिङ्ग दो खण्डों में बनता है। पूर्वोक्त विधान से पार्थिव लिङ्ग का पूजन करना चाहिये। कामना के अनुसार पूजन में लिङ्गों की संख्या होती है। विद्यार्थी एक हजार लिङ्ग बनावे धनार्थी पाँच सौ लिङ्ग बनावे पुत्रार्थी पन्द्रह सौ लिङ्ग बनावे। मोक्षार्थी एक करोड़ लिङ्ग बनावे। भूमि की कामना से एक हजार लिङ्ग बनाना चाहिये। रूपार्थी तीन हजार, तीर्थार्थी दो हजार, सुहृत्कामी तीन हजार, वस्त्रार्थी एक सौ आठ, मारणार्थी सात सौ. मोहनार्थी आठ सौ एवं उच्चाटन के लिये एक हजार लिङ्ग बनावे। स्तम्भन के लिये एक हजार मारण के लिये पाँच सौ जेल से छुटकारे के लिये डेढ़ हजार, महाराजभय में पाँच सौ, चोरादि संकट में दो सौ, डाकिनी के भय में पाँच सौ दरिद्रता निवारण में पाँच हजार और सर्वार्थ सिद्धि के लिये दश हजार लिङ्ग बनावे एक लिङ्ग पापविनाशक, दो लिङ्ग धनदायक एवं तीन लिङ्ग सभी कामनाओं का पूरक है। इस प्रकार कामनानुसार पूजन में लिङ्गों की संख्या कही गई है-

ईश्वर उवाच

मुने सर्वप्रयत्नेनन पार्थिवं लिङ्गमुत्तम् ।

कर्तव्यं हि नृभिर्नित्यं कामुद्दिश्य यत्नतः ॥१५॥

अखण्डं पार्थवं लिङ्गं द्विखण्डं स्थावरं मतम् ।

पूर्वोक्तेन विधानेन पूज्यं लिङ्ग तु पार्थिवम् ॥१६॥

संख्या पार्थिविलिङ्गानां यथाकामं निगद्यते ।

विद्यार्थी लिङ्गसाहस्रं धनार्थी शतपञ्चकम् ॥१७॥

पुत्रार्थी सार्धसाहस्रं कान्तार्थी शतपञ्चकम्।

मोक्षार्थीं कोटिगुणितं भूकामस्तु सहत्रकम् ॥१८॥

रूपार्थी त्रिसहस्रं च तीर्थार्थी द्विसहस्रकम् ।

सुहृत्कामी त्रिसाहस्रं वस्त्रार्थी च शताष्टकम् ॥१९॥

मारणार्थी सप्तशतं मोहनार्थी शताष्टकम् ।

उच्चाटनपरश्चैव सहस्रं च यथोक्तितः ॥२०॥

स्तम्भनं तु सहस्रेण मारणं शतपञ्चकम् ।

निगडान्मुक्तिकामस्तु सहस्रं सार्धमीरितम् ॥२१॥

महाराजभये पंचशतं चोरादिसङ्कटे ।
शतद्वयं तु डाकिन्या भये पश्चशतं तु वा ॥२२॥
दारिद्र्ये पञ्चसाहस्रमयुतं सर्वकामदम् ।
एकं पापहरं प्रोक्तं द्विलिङ् चार्थसिद्धिदम् ॥२३॥
त्रिलिङ्ं सर्वकामानां कारणं परमीरितम् ।
उत्तरोत्तरमेव स्यात् पूर्वोक्तगणनावधि ॥२४॥

ग्रन्थान्तर में कहा गया है कि दश हजार लिङ्ग बनाने महाराजभय का हरण होता है। डेढ़ हजार लिङ्ग से बन्धन से छुटकारा होता है। दश हजार लिङ्ग बनाने से मनुष्य कारागृह से छूटता है। डाकिनी आदि के भय होने पर सात हजार लिङ्ग बनावे। पुत्रप्राप्ति के लिये एक हजार पाँच सौ पचपन लिङ्ग बनावे। दश हजार लिङ्ग बनाने से कन्या प्राप्त होती है। इस प्रकार लिङ्गार्चन से अतुल सम्पत्ति मिलती है। पृथ्वी पर एक लाख लिङ्गार्चन करने वाला साक्षात् शिव के समान हो जाता है-

लिङ्गानामयुतं कृत्वा महाराजभयं हरेत्।

सहस्राणि तथा पञ्च निगडान्मुक्तये ध्रुवम् ॥ १ ॥

कारागृहादिमुक्त्यर्थमयुतं कारयेद्बुधः।

डाकिन्यादिभये सप्तसहस्रं कारयेत्ततः ॥२ ॥

सहस्रं पञ्चपञ्चाशदपुत्रो हि प्रकारयेत्।

लिङ्गानामयुतेनैव कन्यकां सततं लभेत् ॥ ३ ॥

एवं लिङ्गानेनैवमतुलां श्रियमाप्नुयात्।

लक्षमेकं तु लिङ्गानां यः करोति नरो भुवि ॥४ ॥

शिव एव भवेत्सोऽपि नात्र कार्या विचारणा।

फलविशेषार्थं लिङ्गनिर्माणद्रव्य का निर्णय

पार्थिव लिङ्ग पूजन से से करोड़ों यज्ञों के फल प्राप्त होते हैं। मनुष्यों को भोग, मोक्ष, काम अर्थ होते हैं। ब्रह्मस्वहरण के पाप से छुटकारे के लिये सोने के लिङ्ग की पूजा करे। नमक के लिंग की पूजा से सौभाग्य प्राप्त होता है। पार्थिव लिंग समस्त कामनाओं को देने वाला होता हैं। बालू से

निर्मित लिंग अनेक गुणों से युक्त होता है। तिल-पिष्ट से बने लिंग के पुजन से ग्राम का लाभ होता है। भूसे से निर्मित लिंग का पुजन मारण कर्म में किया जाता है। अत्र से निर्मित लिङ्ग अ्र प्रदान करने वाला होता है। गुड़ से बना लिंग प्रौति बढ़ाने वाला होता है। गन्धनिर्मित लिंग से भोग प्राप्त होता है। शक्कर से निर्मित लिङ्ग से सुख प्राप्त होता है। यवपिष्ट से निर्मित लिङ्ग वंशवृद्धि करता है। चावल के आँटे से निर्मित लिंग बहुत पुत्र देने वाला होता है। समस्त रोगों के नाश के लिये गोबर से निर्मित लिंग की पूजा करनी चाहिये। केश एवं अस्थ से निर्मित लिंग समस्त शत्रुओं का विनाशक होता है। आसुरी लवण से निर्मित लिंग समस्त लोकों को वश में करने वाला होता है। हल्दी-चूर्ण से निर्मित लिंग से स्तम्भन होता है। तण्डुलचूर्ण से निर्मित लिंग विद्या देने वाला होता है। दही एवं दुग्ध से निर्मित लिङ्ग कीर्ति, लक्ष्मी एवं सुख देने वाला होता है। धान्यनिर्मित लिंग धान्य देने वाला एवं फलनिर्मित लिंग फल देने वाला होता है। मुक्ताफल (कोंहड़ा) या आँवलाफल से निर्मित लिङ्ग समस्त सौभाग्य एवं पुण्य देने वाला होता है। मक्खन से निर्मित लिंग कीर्ति एवं साम्राज्य

देने वाला होता है। दूर्वा एवं गुडूची से निर्मित लिंग अपमृत्यु का निवारक होता है। ईख से निर्मित लिंग उच्चाटनकारक होता है। इन्द्रनील (नीलम) से बना लिंग सम्पन्नता देने वाला होता है। स्फटिक से निर्मित लिंग असंख्य लोगों का स्वामित्व प्रदान करता है। रजत-निर्मित लिंग के पूजन से पितरों की मुक्ति होती है। स्वर्गलोक की प्राप्ति के लिये सुवणनिर्मित लिङ्ग की पूजा करनी चाहिये। ताप्र - निर्मित लिंग से पुष्टि प्राप्त होती है। पीतल-निर्मित लिंग का पूजन कृषि कार्य हेतु किया जाता है। कीर्ति चाहने वाले को कॉँसे से निरमित लिंग की पूजा करनी चाहिये एवं शत्रमृत्यू की कामना वाले को सदा लौहनिर्मित लिंग की पूजा करनी चाहिये। ज्वरशान्ति के लिये सदा चन्दन-निर्मित लिंग की पूजा करनी चाहिये एवं शान्ति चाहने वालों को कर्पूर- निर्मित लिंग का अर्चन करना चाहिये। गन्ध की कामना वाले कस्तूरी से बने लिंग का अर्चन करना चाहिये एवं गोरोचन से बने लिंग की पूजा रूप चाहने वाले को करना चाहिये। कान्ति चाहने वाले को बराबर कुड्धूम एवं केशरनिर्मित लिङ्ग का अर्चन करना चाहिये। श्वेत अगर से बने लिङ्ग की पूजा से महाबुद्धि को

वृद्धि होती हैं। काले अगर से निर्मित लिङ्ग के पूजन से धारणा शक्ति बढ़ती है। यक्षकर्दम के लिङ्ग से प्रीति की वृद्धि होती है। गाय की कामना से गेहूँ के चूर्ण से बने लिङ्ग की पूजा करनी चाहिये। मूंग के चूर्ण से बने लिङ्ग के पूजन से मुक्ति मिलती है। उड़दचूर्ण लिङ्ग से नित्य इष्ट अर्थ की सिद्ध होती है। चने के वेसन से निर्मित लिङ्ग के पूजन से बुद्धि बढ़ती है। धान्यनिर्मित लिङ्ग की पूजा से धान्य प्राप्त होते हैं। यव धान्यमिश्रित लिङ्ग से सभी अरिष्टों का निवारण होता है। श्वेततिल से निर्मित लिङ्ग के पूजन से श्वेत द्वीप में वास प्राप्त होता है। जो मनुष्य काले तिल से सम्यक् रूप से लिङ्ग बनाकर पूजन करता है, वह कामदेव के समान स्त्रियों का प्रिय होता है-

अर्चा पार्थिवलिङ्गानां कोटियज्ञफलप्रदा ॥५ ॥

भुक्तिदा मुक्तिदा नित्यं तत्तत्कामार्थदा नृणाम्।

ब्रह्मस्वपरिहारार्थ सौवर्ण लिङ्गमर्चयेत् ॥६ ॥

लवणेन च सौभाग्यं पार्थिवं सार्वकामिकम्।

अनेकगुणसम्भूतं रेतोत्थं परिकीर्तितम् ॥७ ॥

ग्रामदं तिलपिष्टोत्यं तुषोत्थं मारणे स्मृतम्।

आदि शंकर वैदिक विद्या संस्थान

दूरभाष: 9044016661

अन्नोत्थमन्नदं प्रोक्तं गुडोत्थं प्रीतिवर्धनम् ॥ ८ ॥

गन्धोत्थं भोगदं चैव शर्करोत्थं सुखप्रदम्

यवपिष्टोद्भवं लिङ्गं वंशकामोऽर्चयेत्पुमान् ॥ ९ ॥

तण्डुलानां च पिष्टेन पुत्रबाहुल्यमाप्नुयात्।

सर्वरोगविनाशाय गोमयोत्थं प्रपूजयेत् ॥ १० ॥

केशास्थिसम्भवं लिङ्गं सर्वशत्रुविनाशनम्।

आसुरं लवणोत्थं च सर्वलोकवशङ्करम् ॥११ ॥

स्तम्भने रजनीपिष्टसम्भवं लिङ्गमुत्तमम्

तण्डुलोद्भवपिष्टानां लिङ्गं विद्याप्रदं स्मृतम् ॥ १२ ॥

दधिदुग्धोद्भवं लिङ्गं कीर्तिलक्ष्मीसुखप्रदम्।

धान्यदं धान्यजं लिङ्गं फलोत्थं फलदं भवेत् ॥ १३ ॥

पुण्यार्थं सर्वसौभाग्यमुक्ताधात्रीफलोद्भवम्।

नवनीतोद्भवं लिङ्गं कीर्तिसाम्राज्यदायकम् ॥१४ ॥

दूर्वागुडूचीसम्भूतमपमृत्युनिवारणम् ।

इक्षुदण्डोद्भवं लिङ्गं स्फुटमुच्चाटयेत्परम् ॥१५ ॥

इन्द्रनीलमयं लिङ्गं बहुपोषणकामकृत् ।

स्फाटिकं बहुस्वामित्वफलदं मुनिभिः स्मृतम् ॥१६ ॥

पितॄणां मुक्तये पूज्यं लिङ्गं रजतसम्भवम्।

हेमजं सत्यलोकस्य प्राप्तये पूजयेत्पुमान् ॥१७ ॥

पूजयेत्ताम्रजंलिङ्गं पुष्टिकामो हि मानवः।

कृषिकामस्तु सततं लिङ्गं पित्तलसम्भवम् ॥ १८ ॥

कीर्तिकामोऽर्धयेल्लिङ्गं सदा कांस्यसमुद्भवम्।

शत्रुमारणकामस्तु लिङ्गं लोहमयं सदा ॥ १ ९ ॥

ज्वरशान्त्यै चन्दनजमर्चयेद्विधिवत् सदा।

कर्पूरसम्भवं लिङ्गं शान्तिकामोऽर्चयेत्सदा ॥ २० ॥

कस्तूरीसम्भवं लिङ्गं गन्धकामो हि पूजयेत्।

लिङ्गं गोरोचनोत्थं च रूपकामस्तु पूजयेत् ॥ २१ ॥

कान्तिकामस्तु सततं लिङ्गं कुङ्कुमकेसरम्।

श्वेतागरुसमुद्भूतं महाबुद्धिविवर्धनम् ॥ २२ ॥

धारणाशक्तिदं लिङ्गं कृष्णागरुसमुद्भवम्।

यक्षकर्दमसम्भूतं लिङ्गं प्रीतिविवर्धनम् ॥ २३ ॥

गोधूमपिष्टजं लिङ्गं गोकामो हि प्रपूजयेत्।

मुद्रपिष्टमयं लिङ्गं पूजयन्मुक्तिमाप्नुयात् ॥ २४ ॥

माषपिष्टमयं लिङ्गं नित्यमिष्टार्थसिद्धिदम्।

चणकोद्भवपिटेन लिङ्गं बुद्धिविवर्धनम् ॥ २५ ॥

लिङ्गं व्रीहिमयं पूज्यं धान्यकामेन नित्यशः।

यवधान्यमयं लिङ्गं सर्वारिष्टनिवारणम् ॥ २६ ॥

यः करोति तिलैः श्वेतैस्तद्द्वीपे च महीयते।

यः कृष्णैश्च तिलैः सम्यग्लिङ्गं कृत्वार्चयेन्नरः ॥ २७ ॥

कामेशश्च प्रियो नित्यं भवेत्स्त्रीणां हि मानवः।

ऋतु पुष्पों से लिंगार्चन का विशेष फल

गर्मी में बेलाफूल से निर्मित लिङ्ग की पूजा करने से

खेतीबारी में सफलता होती हैं। वर्षा ऋतु में धत्तूर के फूल से बने लिङ्ग की पूजा करने से इस लोक में और परलोक में सुख प्राप्त होता है शरत् काल में नीलोत्पल के लिङ्ग की पूजा भक्तिपूर्वक करने से दुर्लभ सिद्धि प्राप्त होती हैं। हेमन्त ऋतु में फूलने वाले मनोरम पुष्पों से निर्मित लिङ्ग की पूजा से शिव सानिध्य प्राप्त होता है। शिशिर में होने वाले पुष्पों से निर्मित लिङ्ग का पूजन करने से मनुष्य सभी पापों से मुक्त होकर ब्रह्मलोक में जाता है जिस किसी भी प्रकार से किसी भी वस्तु से लिङ्ग बनाकर पूजन करने से प्राजापत्य की सिद्धि होती है। जिस दुरात्माका समय बिना लिङ्गपूजन के व्यतीत होता है, उसकी सर्वत्र महाहानि होती है सभी दान, व्रत, तीर्थ नियम, यज्ञों के फल लिङ्गार्चन से ही प्राप्त होते हैं। कलियुग में संसार में लिङ्गार्चन जैसा श्रेष्ठ है, वैसा दूसरा कोई अर्चन नहीं है। यह शास्त्रों निर्णय है। लिङ्ग भुक्ति मुक्ति का प्रदायक और सभी विपत्तियों का निवारक होता है। इसके नित्य पूजन से मनुष्य शिवसायुज्य को प्राप्त करता है-

ग्रीष्मे च मल्लिकापुष्यसम्भवं लिङ्गमुत्तमम् ॥२८॥

पूजयित्वा नरो भक्त्या प्राप्नोति महती कृषिम् ।

वर्षासु पूजयेद्भक्त्या लिङ्गं कनकपुष्पजम् ॥२९ ॥

इह चामुष्मिके लोके सुखीभवति चात्मनः ।

नीलोत्पलमयं लिङ्गं कृत्वा शरदि मानवः ॥३० ॥

पूजयेत्परमां सिद्धिं भक्त्या प्राप्नोति नित्यशः ।

हैमन्तीयैश्च कुसुमैर्लिङ्गं कृत्वा मनोरमम् ।॥३१॥

भक्त्या चाभ्यर्च्च मतिमान् शिवेन सह मोदते ।

शिशिरे सर्बवपुष्पोत्यं लिङ्गमभ्यच्य मानवः ॥३२॥

सर्वपापं विहायाशु ब्रह्मणा सह मोदते ।

येन केन प्रकारेण यस्य कस्यापि वस्तुनः ॥३३ ।॥

कृत्वा लिङ्गं समभ्यच्य प्राजापत्यमवापुयात् ।

विना लिङ्गार्चनं यस्य कालो गच्छति नित्यशः ॥३४॥

महाहानित्भवेत्तस्य सर्वत्रास्य दुरात्मनः ।

कृत्वा सर्वाणि दानानि व्रतानि विविधानि च ।॥३५॥

तीर्थानि नियमा यज्ञा लिङ्गार्चातः कृताः स्मृताः ।

कलौ लिङ्गार्चन श्रेष्ठं यथा लोके प्रदृश्यते ॥३६ ॥

ततोऽन्यन्नास्ति नास्तीति शास्त्राणामेष निश्चयः ।
भुक्तिमुक्तप्रदं लिङ्गं विविधापन्निवारणम् ॥३७।॥।
पूजयित्वा नरो नित्यं शिवसायुज्यमाप्नुयात्।

विविध लिंगों की श्रेष्ठता

सभी लिङ्गों में पार्थिव लिङ्ग उत्तम होता है । इस लिङ्ग की विधिवत् पूजा से मनुष्य सभी कामनाओं को प्राप्त करता है पत्थर से बने लिङ्ग के पूजन से इहलोक में परम प्रसन्नता सहित सभी कामनाओं की प्राप्ति होती है और सदैव उत्तम सुख मिलता है। पत्थर से निर्मित लिङ्ग से श्रेष्ठ स्फटिक-निर्मित लिङ्ग होता है। स्फटिक से श्रेष्ठ पद्मराग का लिङ्ग होता है। पद्मराग से श्रेष्ठ काश्मीर होता है। काश्मीर से श्रेष्ठ पुष्पराग का लिङ्ग होता है। पुष्पराग लिङ्ग से श्रेष्ठ नीलम का लिङ्ग होता है। नीलम से श्रेष्ठ गोमेद का लिङ्ग होता है और इससे श्रेष्ठ गारुत्मत लिङ्ग होता है गारुत्मत से श्रेष्ठ माणिक्य लिङ्ग होता है। माणिक्य से श्रेष्ठ

मूंगा का लिङ्ग होता है। मूंगे से श्रेष्ठ मोती का लिङ्ग होता है मोती के लिङ्ग के श्रेष्ठ चाँदी का लिङ्ग और चाँदी से श्रेष्ठ सोने का लिङ्ग होता है। स्वर्णलिङ्ग से श्रेष्ठ हीरे का लिङ्ग और हीरे से श्रेष्ठ पारे का लिङ्ग होता है। पारद लिङ्ग से श्रेष्ठ बाणलिङ्ग होता है। इससे श्रेष्ठ कोई लिङ्ग नहीं होता। नर्मदा जल के मध्य में स्थित लिङ्ग को बाण लिङ्ग कहते हैं सभी तीर्थ, यज्ञ, सांग दान व्रत, त्रिकाल सन्ध्या योगसिद्धि का बाण लिङ्ग में वास रहता है। बाणासुर द्वारा अर्चित लिङ्ग को बाणलिङ्ग कहते हैं। इसका विधिवत् अर्चन भक्तिपूर्वक करने पर शिवलोक का वास मिलता है। बाणलिङ्ग के निर्माल्य में चण्डेश्वर का अधिकार नहीं है शिव स्वयं बाणलिङ्ग होकर चन्द्रकान्त के हृदय में रहते हैं। इस पर चढ़े नैवेद्य के भक्षण सेसौ चान्द्रायण व्रत का फल मिलता है। बाणलिङ्ग में ग्राह्य अग्राह्य दो पक्ष हैं बाणलिङ्ग में तिल का चिह्न होने पर वह प्रसाद लिङ्ग के रूप में प्राह्य है। बाण, चाँदी, रत्न, स्फटिक, सोना, काश्मीर का चन्द्रकान्त और स्वायंभुव लिङ्ग में शिव जी सदैव सन्निहित रहते हैं, यह सत्य है, इसमें संशय नहीं है। शिव के नाभिस्वरूप लिङ्ग का पूजन महात्माओं को नित्य करना चाहिये। यह

लिंग पूजा के लिये अन्य सभी लिंगों से श्रेष्ठ कहा गया है-

एतच्च सर्वलिङ्गेभ्यः शस्तं पूजाविधानकैः।
लिङ्गानामपि सर्वेषां पार्थिवं लिङ्गमुत्तमम् ॥ ३८ ॥
कृत्वा सम्पूज्य विधिवत्सर्वान्कामानवाप्नुयात्।
पाषाणसम्भवं लिङ्गं संपूज्य परया मुदा ।।३९ ।।
इह कामानवाप्नोति सदा चानुत्तमं सुखम्।
पाषाणात्स्फाटिकं श्रेष्ठं स्फाटिकात्पद्मरागजम् ॥४० ॥
पद्मरागाच्च काश्मीरं काश्मीरात्पुष्परागजम्।
पुष्परागादिन्द्रनीलमिन्द्रनीलाच्च गोमदम् ॥४१ ॥
ततो गारुत्मतं श्रेष्ठं तस्मान्माणिक्यसम्भवम्।
माणिक्याद्विद्रुमं श्रेष्ठं विद्रुमान्मौक्तिकं परम् ॥ ४२ ॥
मौक्तिकाद्राजतं श्रेष्ठं सौवर्णं राजतात्परम्।
सौवर्णाद्धीरकं श्रेष्ठं हीरकात्पारदं स्मृतम् ॥४३ ॥
पारदाद्बाणजं श्रेष्ठं ततः श्रेष्ठं न विद्यते।
नर्मदाजलमध्यस्थं बाणलिङ्गमिति स्मृतम् ॥४४ ॥

सर्वतीर्थानि यज्ञश्च साङ्गदानव्रतानि च।
त्रिसन्ध्यं योगसिद्ध्यादि बाणलिङ्गे च संस्थितम् ॥४५ ॥
बाणासुरार्चितलिङ्गं बाणलिङ्गं तदुच्यते।
अभ्यर्च्य विधिवद्भक्त्या शिवलोके महीयते ॥४६ ॥
बाणलिङ्गेन चण्डेशे न च निर्माल्यकल्पना ।
सर्व बाणार्पितं ग्राह्यं शक्त्या भक्त्या नचान्यथा ॥४७ ॥
बाणलिङ्गे स्वयंभूते चन्द्रकान्ते हृदि स्थिते।
चान्द्रायणशतं ज्ञेयं शम्भुनैवेद्यभक्षणम् ॥४८ ॥
ग्राह्याग्राह्यविभागोऽयं बाणलिङ्गे विधीयते।
तदर्पितं तिलं चिह्नं ग्राह्यं प्रसादसंज्ञया ॥४ ९ ॥
बाणे च रजते रत्ने स्फाटिके हेमनिर्मिते।
काश्मीरे चन्द्रकान्ते च लिङ्गे स्वायंभुवे तथा ॥५० ॥
सदा सन्निहितो देवः सत्यं सत्यं न संशयः।
शिवनाभिमयं लिङ्गं नित्यं पूज्यं महात्मभिः ॥५१ ॥

लिंगों का त्रिविध उत्तमादि स्वरूप

उत्तमं मध्यमं नीचं त्रिविधं लिङ्गमीरितम् ॥५२ ॥
चतुरङ्गुलमुच्छ्रायं रम्यं वेदिकया शिवम् ।
उत्तमं लिङ्गमाख्यातं मुनिभिस्तन्त्रकोविदैः ॥५३ ॥
तदर्धं मध्यमं प्रोक्तं तस्यार्धं वाधमं स्मृतम्।
एवं लिङ्गं समासाद्य श्रद्धाभक्तिसमन्वितः ॥५४ ॥
पूजयित्वा लभेत्कामान्मनसा चाभिलाषितान्।

उत्तम मध्यम निकृष्ट – तीन प्रकार के लिङ्ग होते हैं मुनियों और तन्त्रशों के अनुसार वेदी से चार अंगुल ऊपर स्थित लिङ्ग उत्तम होता है। दो अंगुल उच्च लिङ्ग मध्यम होता है एवं एक अंगुल उच्च लिङ्ग अधम होता है। इस प्रकार स्थापित लिङ्ग का पूजन श्रद्धा-भक्ति से करने पर सभी इच्छित काम और अभिलाषाओं की पूर्ति होती है।

लिङ्गाराधन परम साधन

आदि शंकर वैदिक विद्या संस्थान

दूरभाष: 9044016661

सभी शास्त्रों का आलोडन करके, उनके अर्थों को जानकर यह निश्चित किया गया है कि लिङ्गपूजन से पुरुषार्थ प्राप्त होते हैं। सभी मूर्तियों को छोड़कर विशेषतः कर्मजाल को त्यागकर विद्वान् परम भक्ति से शिवलिङ्ग का पूजन करे। भवसागर में डूबते सभी स्थावर जंगमों को तरने का साधन लिङ्गार्चन ही है। इससे श्रेष्ठ कोई दूसरा साधन नहीं है अज्ञान तिमिर से अन्धों एवं विषयासक्त चेतना वालों के लिये संसार में लिङ्गार्चन के अतिरिक्त दूसरा कोई सहारा नहीं है। इस सर्वार्थ सिद्धिदायक लिङ्ग की पूजा महाभक्ति से ब्रह्मादि सभी देवता, सभी मुनि, यक्ष- राक्षस- गन्धर्व चारण-सिद्ध-दैत्यदानव करते हैं। वे सभी थोड़े ही दिनों में अपने सभी अभिलषित वस्तुओं को प्राप्त कर लेते हैं-

शास्त्राण्यालोड्य सर्वाणि तदर्थान्परिभाव्य च ॥५५ ॥

पुरुषार्थप्रदं तत्त्वं निश्चितं लिङ्गपूजनम्।

सर्वमूर्तीः परित्यज्य कर्मजालं विशेषतः ॥५६ ॥

भक्त्या परमया विद्वॉल्लिङ्गमेवं प्रपूजयेत्।

लिङ्गार्चनेऽर्चितं सर्वं जगत्स्थावरजङ्गमम् ॥५७ ॥

संसारार्णवमग्नानां नान्यत्तारणसाधनम्।

अज्ञानतिमिरान्धानां विषयासक्तचेतसाम् ॥५८ ॥

प्लवो नान्योऽस्ति जगतो लिङ्गाराधनमन्तरा।

ब्रह्मादयः सुराः सर्वे मुनयो यक्षराक्षसाः ॥ ५ ९ ॥

गन्धर्वाश्चारणाः सिद्धा दैतेया दानवास्तथा।

पूजयित्वा महाभक्त्या लिङ्गं सर्वार्थसिद्धिदम् ॥६० ॥

अचिराल्लेभिरे नूनं सर्वान् कामान् समीहितान्।

स्व-स्वमार्ग से ही पूजाविधान प्रशस्त

ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य, शूद्र या अनुलोमज सभी को लिङ्गपूजन तत्तत् मन्त्रों से करते हैं। द्विजों के लिये वैदिक मार्ग आराधना श्रेष्ठ कही गई है। अन्य लोग भी वैदिक मन्त्र आराधना करते हैं। तान्त्रिक मत में दीक्षित साधक को तान्त्रिक मन्त्रों से विधानपूर्वक आराधना करनी चाहिये। स्मार्तो को शिव आराधना वैदिक मार्ग से नहीं

करनी चाहिये। वैदिकों को सभी पूजन वैदिक मार्ग से ही करना चाहिये। वैदिकों को अन्य मार्ग से भगवान् शिव की आराधना नहीं करनी चाहिये। दधीचि गौतम आदि सैकड़ों सम्बद्ध चित्त वाले दूसरे मार्ग पर नहीं जाते हैं, केवल वैदिक मार्ग से ही पूजा करते हैं। जो वैदिक मार्ग का अनादर करके एवं स्मार्त मार्ग को भी छोड़कर अन्य मार्ग से आराधना करते हैं, उन्हें कर्मफल नहीं मिलता। इनमें भी पार्थिव लिङ्ग शीघ्र सिद्धिदायक है। पार्थिव लिङ्ग से बहुत सिद्धियाँ मिलती हैं-

ब्राह्मणः क्षत्रियो वैश्यो शूद्रो वाप्यनुलोमजः ॥६१ ॥

पूजयेत् सततं लिङ्गं तत्तन्मन्त्रेण साधकः।

द्विजानां वैदिकेनापि मार्गेणाराधनं परम् ॥ ६२ ॥

अन्येषामपि जन्तूनां वैदिकेनापि मन्त्रतः |

तन्त्रोक्तदीक्षितानां च तन्त्रेणापि विधानतः ॥६३ ॥

स्मृतमाराधनं शम्भोर्नॅव वैदिकवर्त्मना।

वैदिकानां च सर्वेषां पूजा वैदिकमार्गतः ॥६४ ॥

कर्तव्या नान्यमार्गेण चेत्याह भगवाञ्छिवः।
दधीचिगौतमादीनां शतसम्बद्धचेतसाम् ॥६५ ॥
न जायतेऽन्यवर्त्मापि शर्मावैदिकवर्त्मना।
यो वैदिकमनादृत्य कर्म स्मार्तमथापि वा ॥६६ ॥
अन्यत्समाचरन्मर्यो न स कर्मफलं लभेत्।
तत्रापि पार्थिवं लिङ्गं क्षिप्रसिद्धिप्रदं भवेत् ॥ ६७ ॥
पार्थिवेन तु लिङ्गेन बहुसिद्धिमवाप्नुयात्।

युगानुसार लिंग श्रेष्ठता तथा पार्थिवार्चन प्रशंसा

सत्ययुग में रत्नमय लिङ्ग का, त्रेता में स्वर्ण लिङ्ग का, द्वापर में पारद लिङ्ग का और कलियुग में पार्थिव लिङ्ग का पूजन श्रेष्ठ होता है। सभी आठ मूर्तियों में पार्थिव मूर्ति परा है। इस प्रकार पार्थिव लिङ्ग में शिव सदैव सन्निहित रहते हैं। जैसे सभी देवों में बड़े शिव हैं वैसे ही सभी लिङ्गों में पार्थिव लिङ्ग श्रेष्ठ है। जैसे सभी वेदों में प्रणव श्रेष्ठ है वैसे ही पार्थिवलिङ्ग श्रेष्ठ आराध्य और पूज्य है। पार्थिव लिङ्ग

का आराधन पुण्य, आयु एवं धन का विवर्द्धक होता है। यह प्रसन्नता, तुष्टि, लक्ष्मी एवं कार्यसाधन में सिद्धिप्रद है। यथोपलब्ध सभी उपचारों से भक्ति श्रद्धा से पार्थिक लिङ्ग का पूजन शास्त्रोक्त विधि से करना चाहिये। पार्थिव लिङ्ग में पञ्चसूत्र विभाग का विचार नहीं होता। आकारमात्र बनाने से ही सभी सिद्धियाँ मिलती है। इसका निर्माण खण्डों में नहीं करना चाहिये। करने से पूजा फल नहीं मिलता। रत्नज, स्वर्णज, स्फाटिक, पारद, पार्थिव पिष्टज, पौष्प और माषज लिङ्ग अखण्ड बनाना चाहिये-

कृते रत्नमयं लिङ्गं त्रेतायां हेमसम्भवम् ॥६८ ॥

द्वापरे पारदं श्रेष्ठं पार्थिवं तु कलौ युगे।

अष्टमूर्तिषु सर्वासु मूर्तिर्वै पार्थिवी परा ॥६ ९ ॥

एवं पार्थिवलिङ्गे तु नित्यं सन्निहितः शिवः।

यथा सर्वेषु देवेषु ज्येष्ठ श्रेष्ठो महेश्वरः ॥ ७० ॥

तथा सर्वेषु लिङ्गेषु पार्थिवं श्रेष्ठमुच्यते।

यथा सर्वेषु वेदेषु प्रणवश्च महान् स्मृतः ॥७१ ॥

तथैव पार्थिवं श्रेष्ठं प्राराध्यं पूज्यमेव हि।

पार्थिवारानं पुण्यमायुर्धनविवर्धनम् ॥७२ ॥

प्रसन्नं तुष्टिदं श्रीदं कार्यसाधनसिद्धिदम्।

यथासर्वोपचारैश्च भक्ति श्रद्धासमन्वितः ॥७३ ॥

पूजयेत्पार्थिवं लिङ्गं शास्त्रोक्तविधिना नरः।

पञ्चसूत्रविभागं च पार्थिवं न विचारयेत् ।।७४ ।।

आकारमात्रं रचयेत्सर्वसिद्धिप्रदायकम्।

द्विखण्डमत्र कुर्वाणो नैव पूजाफलं लभेत् ॥७५ ॥

रत्नजं हेमजं लिङ्गं पारदं स्फाटिकं तथा।

पार्थिवं पिष्टजं पौष्यं माषजं तु प्रकारयेत् ॥७६ ॥

शिवलिङ्ग निर्माण में खण्डाखण्डविभाग निर्णय

अखण्ड को चर लिङ्ग कहते हैं एवं द्विखण्ड को अचर लिङ्ग कहते हैं। खण्ड अखण्ड विभाग का यह चर-अचर कहा गया है। वेदिका विष्णु है और लिङ्ग महेश्वर है। इसी से द्विखण्ड लिङ्ग को स्थावर लिंग कहते हैं। शिववल्लभा महादेवी गिरिजा वेदी एवं पिण्डी साक्षात् महादेव होते हैं;

अतः दोनों के योग से द्विखण्डता होती है। स्थावर लिङ्ग को द्विखण्ड विधान बनाना चाहिये । शैव-सिद्धान्तज्ञानियों ने अखण्ड को जंगम लिङ्ग कहा है। अज्ञान से मोहित होकर चर लिङ्ग को जो दो खण्डों में बनाते हैं उन मूढ़ों को पूजाफल नहीं मिलता। इसलिये शास्त्रोक्त विधि से द्विखण्ड चर लिङ्ग और अखण्ड स्थावर लिङ्ग बनावे। अखण्ड चर लिङ्ग का पूजन सम्पूर्ण फलदायक होता है। द्विखण्ड स्थावर लिङ्ग पूजा से भी सम्पूर्ण फल मिलता है। द्विखण्ड चर लिङ्ग की पूजा से महाहानि होती है। अखण्ड स्थावर लिङ्ग में पूजा से फल नहीं मिलता।

अखण्डं तु चरं लिङ्गं द्विखण्डमचरं स्मृतम्।

खण्डाखण्डविभागोऽयं चराचरतया स्मृतः ॥७७ ॥

वेदिका तु महाविष्णुर्लिङ्गं देवो महेश्वरः।

अतोऽपि स्थावरं लिङ्गं स्मृतं शेषे द्विखण्डता ॥७८ ॥

वेदिका तु महादेवी गिरिजा शिववल्लभा।

पिण्डिका तु महेशानो द्वयोर्योगो द्विखण्डता ॥७ ९ ॥

द्विखण्डं स्थावरं लिङ्गं कर्तव्यं हि विधानतः।
अखण्डं जङ्गमं प्रोक्तं शैवसिद्धान्तवेदिभिः ॥८ ॥
द्विखण्डं तु चरं लिङ्गं कुर्वन्नज्ञानमोहितः।
नैव सिद्धान्तवेत्तारो मुनयः शास्त्रपारगाः ।।८१ ।।
अखण्डं स्थावरं लिङ्गं द्विखण्डं चरमेव च।
ये कुर्वन्ति नरा मूढा न पूजाफलमाप्नुयुः ॥८२ ॥
तस्माच्छास्त्रोक्तविधिना द्विखण्डं चरसंज्ञितम्।
विखण्डं स्थावरं लिङ्गं कर्तव्यं परया मुदा ॥८३ ॥
अखण्डे तु चरे पूजा सम्पूर्णफलदा स्मृता।
द्विखण्डे स्थावरे पूजा सम्पूर्णफलदायिनी ॥८४ ॥
द्विखण्डे तु चरे पूजा महाहानिः प्रजायते।
अखण्डे स्थावरे पूजा न पूजाफलदायिनी ॥८५ ॥